REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2021

शाही मुग़ल महिलाओं की फ़ारसी शायरी एवं शैक्षिक योग्यता का एक परिचय

राकेश विज[1] एवं डॉ. बहारुल अली[2]
[1]शोध छात्र, फ़ारसी भाषा एवं साहित्य, गुवाहाटी विश्वविद्यालय।
[2]असिस्टेन्ट प्रोफ़ेसर, फ़ारसी भाषा एवं साहित्य, गुवाहाटी विश्वविद्यालय।

परिचय :

मुगल शासन के दौरान फ़ारसी भाषा और साहित्य को भारत में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त था। हम देखते हैं कि मुगल वंश का शासन काल वह काल था, जहाँ फ़ारसी भाषा, साहित्य कला और संस्कृति ने शानदार ढंग से प्रगति की थी और फले फूले और अपने चरम पर पहुंचे थे। फ़ारसी शेर इतनी व्यापक प्रवृत्ति और प्रचलन में थे, कि वे यह शाही 'हरम' का हिस्सा बन गए थे। कुछ शाही महिलाओं को उच्च योग्य फ़ारसी शायर के रूप में भी जाना जाता था, जो किताबें पढ़ने, लिखने और इकट्ठा करने में शामिल थीं और भारत में फ़ारसी शेर को बहुत गम्भीरता से संरक्षण देती थीं जैसे, ज़ैबुन्निसा, नूरजहाँ और गुलबदन बेगम आदि।

वर्तमान शोध-पत्र एक अकादमिक नोट है, जो महिला शायरों की विशेषता और साहित्य में विशेष रूप से फ़ारसी शेर में उनके योगदान पर केन्द्रित है।

मुख्य लेख :

इस्लामिक दार्शनिक विचारों का निरीक्षण करने पर हम पाते हैं कियहाँ शैक्षिक योग्यताओं पर अत्यधिक ज़ोर दिया गया है। हम कुछ हदीसों को भी देखते हैं जो यथासंभव अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमेशा उत्साहवर्धक और प्रेरणादायी हैं जैसे "ज्ञान की तलाश हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है"[1] और "विद्वान पैगम्बरों के वारिस हैं"[2]।

आदर्श इस्लामिक मूल सिद्धांतों का पालन करते हुए मुगलों ने भी सीखने और शिक्षा पर बहुत अधिक ध्यान दिया। तुर्क-तैमूर सेनापति ज़हीरुद्दीन बाबर ने १५२६ ई० में मुगल सल्तनत की स्थापना की। इस सल्तनत ने अपने अनूठे शिष्टाचार, समारोह, कला, संगीत और शेरों के साथ, इतनी समृद्ध संस्कृति का गठन किया कि इसने अपनी पहचान को अपने पतन के बाद भी बरकरार रखा[3]।

साहित्य, शेर, इतिहास लेखन और सुलेख के लिए प्रसिद्ध मुगल बादशाहों के प्रोत्साहन ने इन क्षेत्रों में पहले कभी नहीं देखा गया इसके परिणामस्वरूप एक ऐसा वातावरण उत्पन्न हुआ जिसके मिश्रण ने एक सांस्कृतिक राज्य के रूप में मुगल सल्तनत की पहचान को एक सक्रिय बौद्धिक वातावरण के रूप में जोड़ा जो शाही मुगल महिलाओं के लिए भी आसानी से सुलभ था।

हम देखते हैं, कि मुगल वंश का शासन काल वह युग है जब फ़ारसी भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति आदि ने इस काल में शानदार विकास किया और अपने चरम तक पहुंचे। फ़ारसी शायरी इतनी व्यापक प्रवृत्ति में व्याप्त और प्रचलन में थी कि शाही 'हरम' का भी हिस्सा बन गई थी और कुछ शाही महिलाओं को उच्च योग्य फ़ारसी महिला शायरों के रूप में भी जाना जाने लगा था जो किताबें पढ़ने, लिखने और इकट्ठा करने और साथ ही साथ भारत में फ़ारसी शायरी को बहुत गम्भीरता से संरक्षण देने में शामिल थीं। हम देखते हैं कि वे अत्यधिक कुशल थीं और फ़ारसी पर एक व्यापक उच्च कमान रखती थीं। यहाँ तक कि वे शब्दों के साथ खेलने

के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम थीं और कुछ पलों के अन्दर मौके पर ही फ़ारसी शेर बना लेती थीं जैसे- गुलबदन बेगम, नूरजहाँ और ज़ैबुन्निसा बेगम इत्यादि।

ये मुग़ल महिलायें अपने ख़ाली समय में शौक के रूप में फ़ारसी शेरों की रचना करने वाली महिला शायर हुआ करती थी और उनके शेरों का स्तर मुगल दरबार के किसी भी पेशेवर ईरानी शायर से कम न था। यह भी सच है कि उन्हें महिला शायर के रूप में कभी प्रोतसाहित नहीं किया गया और उनकी रचना 'हरम' तक ही सीमित रहीं और निजी सभाओं और दोस्तों की महफ़िलों का विषय तक ही बनी रहीं परन्तु कला और साहित्य ख़ास तौर से फ़ारसी साहित्य में उनका रचनात्मक योगदान फ़ारसी के किसी अन्य पुरूष विद्वान से कम नहीं रहा है। शाही मुगल मल्लिकाओं और शहज़ादियों का फ़ारसी साहित्य से जुड़ाव और संगति ख़ास तौर से फ़ारसी शायरी के साथ उनके दैनिक जीवन का हिस्सा था और मनोरंजन का प्रमुख साधन भी लेकिन अफ़सोस की बात है, कि फ़ारसी शायरी में उनकी भूमिका और योगदान को अब तक कभी भी उचित स्थान नहीं मिला।

वास्तव में अभी तक महिलाओं के मामलों पर ख़ास तौर से शाही मुगल महिलाओं के मामलों पर लिखने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया गया था इसलिए उनके बारे में बहुत कम जानकारी मिल पाती है। मुगल शहज़ादियों की शिक्षा, साहित्यिक गतिविधियाँ, बौद्धिकता और उनकी साहित्यिक और शैक्षिक सभाओं आदि का मामला हमेशा सबसे कम चर्चा वाला विषय रहा है और इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। इसके पीछे का कारण यह हो सकता है कि उस समय, यह सभी समुदायों में बहुत आम बात थी और सामाजिक संस्कृति का भी हिस्सा था, कि महिलाओं से सम्बन्धित सभी गतिविधियों को छिपाकर रखना और कम से कम चर्चा करना और अगर शाही महिलाओं से सम्बन्धित गतिविधि थी, तो कम चर्चा की गई थी। यह सामान्य प्रथा नहीं थी और पुरूषों की सभा में महिलाओं से सम्बन्धित विषयों पर चर्चा करना उचित नहीं समझा जाता था। इसलिए, यह बहुत आम बात थी, कि महिलाओं की शिक्षा, साहित्यिक गतिविधियाँ, बौद्धिकता और उनकी साहित्यिक और शैक्षिक सभाओं आदि के मामले भी ढ़क जाते थे और उनपर कोई चर्चा नहीं होती थी। साथ ही यह भी आम बात नहीं थी कि जिस शेर में महिलाओं ने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया वह पुरूषों के बीच जगह बनाये या चर्चा का विषय बने और अगर यह मामला शाही महिलाओं से सम्बन्धित होता तो अधिक संवेदनशील हो जाता था इसलिए कम चर्चा हुई। चूँकि उस समय का जीवन बहुत भौतिकतावादी नहीं था और चित्रकारी, गायन, नृत्य, खाना पकाना, शेर लिखना, संगीत जैसी कला-विधाओं को वर्तमान दिनों की तरह प्रचारित करने की बात नहीं थी जबकि ये व्यक्तिगत शौक के बहुत ही निजी मामले माने जाते थे और इनका सार्वजनिक होना बहुत निंदनीय माना जाता था, ख़ासकर अगर यह शाही महिलाओं से सम्बन्धित हो तो मामला और अधिक संवेदनशील हो जाता और कम चर्चा में आता था। यही वजह रही थी कि महिलाओं के मामलों पर लिखने के लिए आम तौर पर प्रोत्साहित नहीं किया गया था, ख़ास तौर पर अगर शाही मुगल महिलाओं से सम्बन्धित मामला होता था, तो उनके बारे में बहुत कम जानकारी मिल पाती थी लेकिन अप्रत्यक्ष स्त्रोत और ऐतिहासिक संदर्भ साबित करते हैं, कि उनका योगदान मुगल शहज़ादों और बादशाहों से कम नहीं था और यह साबित होता है कि वे उच्च-योग्यताधारी व सुशिक्षित थीं और उनका व्यक्तित्व और उपलब्धियाँ वास्तव में शानदार हैं।

एक और बड़ा कारण जो हो सकता है वह यह कि मुगल महिलाओं द्वारा रचित शेर और रचनाएं उनकी व्यक्तिगत डायरी के हिस्से थे। डायरी-लेखन उस समय का बहुत लोकप्रिय चलन था जहाँ वे अपनी भावनाओं को शेरों के रूप में व्यक्त करती थीं और कभी-कभी यह अति व्यक्तिगत भी होता था और उस समय के समाज के अनुरूप यह सामान्य भी नहीं था कि एक महिला द्वारा रचित शेर दूसरों के लिए चर्चा का विषय बन जाए ख़ास तौर से यदि वह एक शाही परिवार से होती थी।

हम देखते हैं कि बाबर की माँ "कुतुलुक निगार ख़ानुम" व दादी "अइसान-दायकात" भी अपने समय की बहुत उच्च शिक्षित महिलाएँ थीं और वे ही थीं जिन्होंने महिलाओं के लिए भी उच्च शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति की प्रवृत्ति को जन्म दिया। उन्होंने बाबर को बौद्धिक वातावरण भी प्रदान किया।

१- गुलबदन बेगम (१५२३-१६०३) :

मुगल शहज़ादियों की सूची में जो पहला नाम सामने आता है वह है "गुलबदन बेगम" जो कि बाबर और दिलदार बेगम की बेटी थीं। उन्हें मुगल परिवार की पहली महिला का नाम दिया जा सकता है जिसने बाकायदा लेखन में हाथ आज़माया और उनकी लिखी रचनाएँ आज भी मौजूद हैं। गुलबदन बेगम अपने समय की उच्च शिक्षित महिला थीं और कला और शायरी में वंशानुगत उत्कृष्टता रखती थीं। गुलबदन बेगम एक नेक और गुणी महिला शायर थीं जो तुर्की और फ़ारसी[४] में रचना किया करती थीं लेकिन उनके बेहद प्रसिद्ध गद्य रचना "हुमाँयूनामा" के कारण उनकी शायराना ख़ूबी और महारथ पर ध्यान नहीं दिया गया और साथ ही साथ उनके इस शायनारा गुण पर शोधकर्त्ताओं और विद्वानों का भी उचित ध्यान नहीं गया।

२- गुलरूख़ बेगम :

यह बाबर की एक और बेटी थीं और इनकी माँ का नाम "सालेह सुल्तान बेगम" था। इनकी साहित्य और शायरी में ऊँचे दर्जे की रूचि थी और फ़ारसी में शेर लिखती और कहती थीं। "सुब्ह-ए-गुलशन" के लेखक, "नवाब अली हसन ख़ान" ने इनकी फ़ारसी शायरी के बारे में विस्तृत वर्णन किया है। कुछ तज़करों में जैसे- "रियाज़ उश शोरा", "मख़ज़नुलगरायब" एवं "सुब्ह-ए-गुलशन" में इनकी फ़ारसी शेरों शायरी के बारे में विस्तृत वर्णन मिलता है।

३- सलीमा सुल्तान बेगम :

यह गुलरूख़ बेगम की बेटी थीं। इनकी शादी पहले बैरम ख़ान "ख़ान-ए-ख़ानान" से हुई और बाद में बादशाह अकबर से। सलीमा एक बहुत बुद्धिमान और शिक्षित महिला थीं। बादशाह अकबर भी इनकी बुद्धि, उच्च स्तर की समझ और देखभाल करने वाले स्वभाव से अत्यधिक प्रभावित था। इनके पास राजनयिक एवं कूटनीतिक गुण थे जो इन्होंने प्रदर्शित भी किया जब शहज़ादा सलीम ने अपने बाप के ख़िलाफ़ बगावत की तो दोनों के बीच सुलह कराने में इनका अहम योगदान था।

"बज़्म-ए-तैमूरिया" के लेखक "सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान" बताते हैं कि जहाँगीर उनके बौद्धिक और साहित्यिक गुणों से बहुत प्रभावित था और जब उनकी मौत हुई तो उन्होंने "तुज़ुक-ए-जहाँगीरी" में उन पर एक विस्तृत लेख भी लिखा।

सलीमा बेगम को अच्छी किताबों के संग्रह करने में विशेष रूचि थी और उन्होंने एक बहुत ही उच्च स्तरीय पुस्तकालय[७] बना रखा था जहाँ कुछ बहुत ही दुर्लभ और कीमती किताबें रखी गई थीं, और जिन्हें बाद में शाहजहाँ और औरंगज़ेब[८] के शाही पुस्तकालयों में स्थानांतरित कर दिया गया।

४- माहम बेगम :

यह बादशाह अकबर की सौतेली माँ थीं। यह उच्च शिक्षित महिला थीं और इन्होंने शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र पर भी ख़ास ध्यान दिया और इस क्रम में उन्होंने पुरानी दिल्ली में "ख़ैरूल नमाज़" नामक एक मदरसा स्थापित किया लेकिन आज उसका कोई अवशेष या खंडहर नहीं बचा है। मशहूर भारतीय इस्लामिक विद्वान् "सर सैय्यद अहमद ख़ान" ने अपनी किताब "आसारूस सनादीद" में इनके बौद्धिक गुणों और शिक्षा में योगदान का ज़िक्र किया। "सर सैय्यद ने फ़ारसी में इनके योगदान और सेवा पर शेरों के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि भी दी थी।

इनके शेर बहुत धार्मिक और नैतिक प्रकृति के हुआ करते थे और यह अपनी शायरी[९] के ज़रिये से नैतिकता की शिक्षा देती हैं और आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करती हैं।

५- जानान बेगम :

यह बैरम ख़ान की बेटी और अब्दुर रहीम "ख़ान-ए-ख़ानान" की बहन थीं। इनकी शादी अकबर के बेटे दानयाल से हुई थी और यह अपनी बुद्धि के साथ सुन्दरता के लिए भी बहुत मशहूर थीं। जानान बेगम बहुत प्रतिभाशाली, बुद्धिमान और शिक्षित महिला थीं और विद्वानों को संरक्षण प्रदान करती थीं और हमेशा गरीबों की मदद करती थीं। यह फ़ारसी शायरों की सभाओं में जाना पसंद करती थीं। यह ख़ुद भी एक उच्च कोटि की फ़ारसी शायर थीं और इनके शेरों की प्रवृत्ति नैतिक-शिक्षा, सूफ़ीवादी, आध्यात्मिक और कभी-कभी किस्मत से बहुत शिकायत करने वाली होती हैं।

६- नूरजहाँ बेगम (१५७७-१६४५) :

नूरजहाँ तैमूर जाति से सम्बन्धित नहीं थीं लेकिन वह महिला थी जिसने मुगल वंश[८] पर शासन किया था। यह वास्तव में एक फ़ारसी-ईरानी महिला थीं जिसकी शादी जहाँगीर के सेनापति शेर अफ़ग़न से हुई थी और अपने पति की एक युद्ध में मौत के बाद जहाँगीर से शादी कर ली और इस तरह भारत की मल्लिका बनीं। ऐसा कहा जाता है कि जहाँगीर ने ही सिर्फ नूरजहाँ[९] तक पहुँचने के लिए ही उसके पति शेर अफ़ग़न का कत्ल करवा दिया था। "सैय्यद सबाहुद्दीन" ने अपनी किताब "बज़्म-ए-तैमूरिया" में कहा है कि नूरजहाँ तत्काल शेर रचना के लिए प्रसिद्ध थीं और इतिहास की किताबों में उनकी इस गुणवत्ता के कई उदाहरण वर्णित हैं। यह "बदिया गूयी"[१०] कहलाता था। इसके अलावा उन्होंने इनकी "बदिया गूयी" के कई उदाहरण दिए।

"सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान" ने अपनी किताब में एक बहुत ही ज़रूरी बात का ज़िक्र किया था और कहा था कि "मासीरूल उमरा" के लेखक ने अपनी किताब के पृष्ठ संख्या-१३४ के पहले हिस्से में ज़िक्र किया है कि नूरजहाँ अपने शेरों में "मख़्फ़ी"[११] उपनाम का उपयोग करती थी और दिलचस्प और ध्यान देने वाली बात यह

है, मुगल घराने की तक़रीबन सभी महिला शायरों ने इसी उपनाम का उपयोग किया है। यह आगे की शोध का विषय है।

७- मुमताज़ महल (१५९३-१६३१) :

यह बादशाह शाहजहाँ की सबसे प्रिय बेगम थीं और इन्हें "मुमताज़ महल" की उपाधि मिली हुई थी। यह एक बहुत ही प्रतिभाशाली महिला थीं और इन्होंने उच्च-शिक्षा प्राप्त की थी। यह एक बुद्धिमान महिला थीं और इनमें परिहास-युक्त और हाज़िर जवाबी के गुण थे।

८- जहाँआरा बेगम (१६१४-१६८१) :

यह बादशाह शाहजहाँ और मुमताज़ महल की बेटी थीं और अपनी बुद्धि, कला-प्रेम और समकालीन राजनीति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए बहुत मशहूर थीं। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्रसिद्ध फ़ारसी शायर तालिब आमूली की बहन सत्तीउन निसा ख़ानुम से हासिल की। चूँकि सत्तीउन निसा ख़ुद एक महान विद्वान, संगीत, चिकित्सा, भाषा-विज्ञान और साहित्य आदि में विशेषज्ञता के साथ एक 'हाफ़िज़ा' थीं, इसलिए उन्होंने इन्हें बहुत प्रशिक्षित किया और अपनी सारी बुद्धि और गुणें को इन्हें हस्तांतरित कर दिया।

जहाँआरा एक बहुत बुद्धिमान महिला थीं जिसने सिर्फ़ २६ साल की उम्र में १०४९ हिजरी को "मोनिसुल आरवाह" नामक किताब लिखी। यह किताब हज़रत मोइनुद्दीन विश्ती और विश्ती विचारधारा के अन्य महान इस्लामिक सूफ़ी नेताओं के बारे में है।

जहाँआरा बेगम एक उच्च कोटि की विद्वान और फ़ारसी की महिला शायर थीं। सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान ने इन्हें एक उच्च गुणवत्ता वाली महिला शायर के रूप में याद किया और "बज़्म-ए-तैमूरिया" में "मोनिसुल आरवाह" से इनके कुछ फ़ारसी शेरों की नकल की है। उन्होंने कहा कि "मोनिसुर आरवाह" वह किताब है जिसमें इनके शेर अच्छी संख्या में मौजूद हैं।

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान ने उर्दू भाषा में "मुंशी शील चंद" द्वारा लिखित एक किताब "तारीख़-ए-आगरा" का ज़िक्र किया है और एक मर्सिया के तीन शेरों की नकल की है, जिसे जहाँआरा बेगम ने अपने बाप की मौत पर कहा था। इन्हें निज़ामुद्दीन औलिया के परिसर में एक बेहद साधारण कब्र[१२] में दफ़नाया गया।

९- ज़ैबुन्निसा बेगम :

यह औरंगज़ेब और दिलरस बानु बेगम[१३] की पहली औलाद थीं। इस्लामिक परम्परा के अनुसार इन्होंने सबसे पहले कुरान को निपुणता के साथ सीखा और "हाफ़ीज़ा" बनी। इससे इनके बाप को बहुत ख़ुशी हुई और उन्होंने इन्हें तीन हज़ार अशरफ़ियाँ भेंट कीं। इन्होंने अरबी और फ़ारसी भी बहुत अच्छी तरह सीखी और उन पर अपनी अच्छी पकड़ बनायी।

"मख़ज़नुल ग़रायब" के संदर्भ के आधार पर सैय्यद सबाहुद्दीन ने "ज़ैबुल मंशाआत" का ज़िक्र किया है जो कि एक अति दुर्लभ किताब है जिसे इनके द्वारा लिखे जाने का दावा किया गया था जिसमें इनके [१४,१५] लेखन और इनके द्वारा रचित शेरों का संग्रह शामिल था।

ज़ैबुन्निसा एक उच्च कोटि की महिला शायर थीं और उनके पास एक 'दीवान' भी था। यह सूफ़ी प्रकृति और शैली की महिला शायर थीं जो उनके शेर में भी झलकता है।

यह भी एक सच्चाई है कि औरंगज़ेब की दूसरी बेटियाँ भी उच्च शिक्षित थीं और ज्ञान और शिक्षा की सेवा में शामिल थीं लेकिन ज़ैबुन्निसा की प्रसिद्धि और लोकप्रियता के सामने उनके योगदान पर ध्यान नहीं दिया गया।

१०- बदरून निस्सा :

"मआसिर-ए-आलमगिरी" के लेखक के संदर्भ के आधार पर सैय्यद सबाहुद्दीन बदरून निस्सा[१६] को बादशाह औरंगज़ेब की एक और बेटी के रूप में याद करते हैं। वह आगे कहते हैं कि यह भी अपनी बहन ज़ैबुन्निसा की तरह एक 'हाफ़िज़ा' थीं और इन्होंने पूरे कुरान को पूरी तरह से कंठस्थ कर लिया था। ऐसा कहा जाता है कि यह बहुत ही धर्मपरायण महिला थीं जिनका झुकाव धार्मिक गतिविधियों की ओर अधिक था और इस्लामिक अध्ययन में इसनके विशेष रूचि थी।

११-ज़बदातुन निस्सा :

सैय्यद सबाहुद्दीन ने ज़बदातुन निस्सा[१७] के बारे में "मआसिर-ए-आलमगिरी" किताब के संदर्भ से लिखा है कि वह बहु शिक्षित और पवित्र व्यक्ति थीं और उन्होंने शिक्षा और धर्म की सेवा में पूरा जीवन बिताया लेकिन दुर्भाग्य से उनके बारे में बहुत कम जानकारी है।

१२- ज़ीनतुन निस्सा :

यह बादशाह औरंगज़ेब की एक और बेटी थीं और उच्च कोटि की शिक्षित और धर्मपरायण महिला[१८] थीं। "बज़्म-ए-तैमूरिया" के लेखक अपनी किताब के पृष्ठ संख्या- २४४ में लिखते हैं कि औरंगज़ेब की अन्य बेटियों की योग्यता ज़ैबुन्निसा की अत्यधिक प्रसिद्धि कि वजह से फ़ीकी रह गयी लेकिन हकीकत यह है कि ज़ीनतुन निस्सा भी ज़ैबुन्निसा की तरह ही प्रतिभाशाली और शिक्षित विद्वान महिला थीं। सैय्यद सबाहुद्दीन "मआसिर-ए-आलमगिरी" किताब के संदर्भ से आगे कहते हैं कि इन्होंने अपने बाप औरंगजेब द्वारा शिक्षा के लिए दी जाने वाली सभी सुविधाओं को बहुत गम्भीरता से लिया और उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त की और इस्लामिक धर्मशास्त्र, साहित्य, धार्मिक मामलों और अन्य की विशेषज्ञ के रूप में उभर कर सामने आईं।

निष्कर्ष :

अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मुगल शहज़ादियाँ बहुत उच्च श्रेणी की महिला शायर हुआ करती थीं और ज़्यादातर समय 'हरमों' में साहित्यिक और शैक्षणिक गतिविधियों में लगी रहती थीं। ऐतिहासिक दस्तावेजों से भी हमें पता चलता है कि शाही 'हरम' साहित्यिक सभाओं और गम्भीर शैक्षिक गोष्ठियों के केन्द्र थे जहाँ भारत और ईरान के मशहूर फ़ारसी शायरों के शेर और शायरी का दौर चलता रहता था और हमेशा साहित्यक चर्चा होती रहती थी।

जहाँआरा बेगम वह महिला थीं जो अपना ज़्यादातर समय 'हरम' के अन्दर स्थित अपने पुस्तकालय में बिताती थीं। औरंगज़ेब की बेटी ज़ैबुन्निसा बेगम की अपनी लाइब्रेरी और 'हरम' के अन्दर शोध कार्यों के लिए एक अकादमी थी जिसे "बैतुल उलूम" के नाम से जाना जाता था और इनकी अकादमी से प्रकाशित किताबों के नाम अनिवार्य रूप से "ज़ैब"[१९] से शुरू होते थे। यह एक पहचान के रूप में था कि अमुक पुस्तक ज़ैबुन्निसा की अकादमी से संबंधित है। 'हरम' की साहित्यिक मण्डली हमेशा उच्च स्तरीय साहित्यिक चर्चाओं और शोधों में लगी रहती थी जो पुरूषों की सभाओं की तुलना में अधिक गम्भीर और शैक्षिक प्रकृति की थी।

संदर्भ:-

१. अल-तिर्मिज़ी, हदीस नं०-७४
२. अबू दाऊद, ज्ञान की किताब, किताब नं०-२५, हदीस नं०-१६३१
३. गॉर्डन जोंसन, एड द न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया, वॉल्यूम १ जॉन एफ रिचर्ड्स द्वारा द मुगल एम्पायर, (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस २००१) पृष्ठ-१
४. बेवरिज, "परिचय", हुमाँयू-नामा, पृष्ठ-७६
५. एनेमेरी शिमेल, द एम्पायर ऑफ़ द ग्रेट मुगल्स हिस्ट्री, आर्ट एंड कल्चरकोरिन एटवुड (लाहौरः संग-ए-मील पब्लिकेशंस, २००५) पृष्ठ-१६१
६. एस०सी०वेल्च, भारत, कला और संस्कृति, १३००-१९०० ई० (न्यूयॉर्कः मेट्रोपॉलिटन म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट एंड होल्ट, राइनहार्ट एंड विंस्टन, १९८५) पृष्ठ-१५३
७. सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, बज़्म-ए-तैमूरिया (आज़मगढ़, उत्तर प्रदेशः दारूल मुसन्नाफ़ीन), शिबली अकादमी, २००९, आई.एस.बी.एन. : ९७८-९३-८०१०४-२३-२) पृष्ठ-२२८
८. पूर्वोक्त या इबिड, पृष्ठ-२३०
९. पुरूषोत्तम नागेश ओक, भारत में मुस्लिम सुल्तान, भाग-२ (नई दिल्ली : हिंदी साहित्य सदन, २०११) पृष्ठ-१०९
१०. यह उस समय की कला थी, जिसमें एक व्यक्ति एक मिसरा बनाता था और दूसरे व्यक्ति को तत्काल अगला मिसरा बनाकर बेत को पूरा करना होता था।
११. पूर्वोक्त
१२. पूर्वोक्त
१३. डॉ० तौफ़ीक सुबाहानी, निगाही बे तारीख़-ए-अदब-ए-फ़ारसी दर हिंद (तेहरानः शूरा-ए-गोस्तारेश-ए-ज़बान-ओ अदबियात-ए-फ़ारसी, १३७७, आई०एस०बी०एन ९६४-६३७१-४२-६) पृष्ठ-७३९
१४. पूर्वोक्त

१७. सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, बज़्म-ए-तैमूरिया ;आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश: दारूल मुसन्नाफ़ीन शिबली अकादमी, २००९ आई०एस०बी०एन०: ९७८-९३-८०१०४-२३-२) पृष्ठ-२४०
१६. पूर्वोक्त पृष्ठ - २४५
१७. पूर्वाक्त
१८. पूर्वोक्क्त
१९. सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, बज़्म-ए-तैमूरिया (आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश: दारूल मुसन्नाफ़ीन), शिबली अकादमी, २००९, आई.एस.बी.एन. : ९७८-९३-८०१०४-२३-२) पृष्ठ-२४०